VOL- XI | ISSUE- II | FEBRUARY | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

भारतीय इतिहास में स्थापत्य कला का योगदान

सहायक आचार्य पंकज कुमार ;
MA History, NET, RSET History)
राजकीय महाविद्यालय हिन्दुमलकोट (श्रीगंगानगर)

शोध आलेख सार :-

भारत के इतिहास में स्थापत्यकला का महत्त्वपूर्ण योगदान है। स्थापत्य कला की शुरुआत पाषाण काल से मानी जाती है जिसमें आदिमानव ने पत्थरों को तराश कर उन्हें एक उपयोगी वस्तु का रूप प्रदान किया है। जिसमें उसने औजारों से लेकर गुफा निर्माण भी शामिल है। सिंधुघाटी सभ्यता में कई पुर निर्माण की जानकारी मिलती है। सिंधुघाटी सभ्यता की स्थापत्य कला इतिहास में एक अनुपम देन है जिसमें घर, नालियाँ, जलाशय, अन्नागार, गोदीवाडा, मूर्तियाँ, यज्ञवेदिका आदि को प्रमुख रूप से शामिल किया जाता है। इसके साथ ही वैदिक काल की स्थापत्य कला व गुरुकुलों का निर्माण एक विशेष शैली से किया जाता था। मौर्यकाल से पूर्व राजप्रसादों में मुख्यतया लकड़ी का प्रयोग किया जाता था । अशोक प्रथम व्यक्ति था जिसने महल निर्माण में पत्थरों का प्रयोग किया। भारत में स्थापत्य कला का इतिहास अथाह है। भारत में उत्तर भारत व दक्षिण भारत की स्थापत्य कला भिन्न है। चाहे वह राजप्रसाद हो, मंदिर हो, अन्य लोक महत्त्व की इमारतों आदि में भिन्नता पायी जाती है। दक्षिण भारत में चेर, चोल, पाड्य, पल्लव, चालुक्य, स्थापत्य कला में राष्ट्रकूट आदि राजवंशो एक स्वर्णकाल स्थापित किया है।

मूल शब्दः *स्थापत्य कला, पाषाण कला, गुहानिर्माण, अन्नागार, गोदीवाड़ा, मूर्तियाँ, राजप्रसाद, चोल, चेर,पाण्ड्य कला तथा वैदिक गुरुकुलों की स्थापत्य संरचना इत्यादि ।*

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। शोध सामग्री को प्रमुख पुस्तकों से संकलित किया गया है। वस्तुतः शोध पत्र द्वितीयक आंकडों पर आधारित है इसमें उदाहरण के विवरणों को भी शामिल किया गया है।

शोध के उद्देश्य –

- प्राचीन इतिहास में स्थापत्य कला के योगदान का पता लगाना
- ऐतिहासिक सामग्री में स्थापत्य कला के महत्त्व को समझना।
- प्राचीन स्थापत्य साक्ष्यों को वर्तमान पीढ़ी से अवगत करवाना ।
- स्थापत्य कला का वर्तमान न्यायिक पृष्ठभूमि में महत्त्वपूर्ण योगदान को बताना
- ऐतिहासिक महत्त्व की प्राचीन इमारतों का पर्यटन में महत्त्व को समझना।

भूमिका : भारतीय इतिहास में कला व स्थापत्य का एक स्वर्णिम महत्त्व है। भारतीय इतिहास में देशकाल में स्थापत्य कला को अलग-अलग समय में प्रभावित किया है। आदिमानव ने पाषाण काल से लेकर वर्तमान काल तक स्थापत्य कला हमेशा फलित हुई है। तथा वैदिक काल के दौरान गुरुकुलों व आवास प्रणाली महत्त्वपूर्ण थी। भारत के विभिन्न राजवंशो का वास्तुकला में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सिन्धुघाटी सभ्यता में नगरों का विकास हुआ है। यह नगर निर्माण का प्रथम साक्ष्य था । इसके बाद महाजनपद काल में बौद्ध काल

में दूसरा नगरीकरण हुआ था । मौर्य काल में मौर्यों शासकों का भी वास्तु व स्थापत्यकला में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अशोक भारत का प्रथम सम्राट था , जिसने महलों में पत्थरों का प्रयोग किया था। अशोक ने बुद्ध की स्मृति में ८४००० स्तूपों का निर्माण करवाया था। अशोक का सारनाथ का स्तूप व सांची का स्तूप कला की दृष्टि में सर्वोत्तम उदाहरण है। भारत में शिलालेख व स्तम्भ लेख भी स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूनों में शामिल है। अशोक की इमारतें व लेख उत्कृष्ट अभियान्त्रिक चमत्कार का उदाहरण है।

गुप्तकाल को स्थापत्य कला का स्वर्णकाल कहा जाता है।गुप्त काल में मन्दिर निर्माण की एक नयी शैली नागर शैली का भी विकास हुआ, जिसमें गुप्तकाल में देवगढ़ का दशावतार मन्दिर प्रमुख है जिसमें सर्वप्रथम गुम्बद का प्रयोग किया गया है। गुप्तकाल की स्थापत्य कला पूरे भारतवर्ष में सराहनीय है चाहे वह स्तूप कला हो या मंदिर कला सबमें एक नई तकनीक का समावेश किया गया है। इसके साथ ही गुप्तकाल के कुछ प्रसिद्ध मन्दिर है। जैसे सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर , भीतरगाँव का मंदिर नचना कुठार का पार्वती मंदिर इसके साथ ही गुफाकला में बराबर की गुफा, बाघ की गुफा यहाँ की कलाकृति देखते ही बनती है। जिसमें लोमेष ऋषि की गुफा का दरवाजा सर्वाधिक कलाकृति युक्त है। इसके साथ ही भारत की स्थापत्य कला में अन्य कला -कृतियाँ जैसे - स्तूप, बिहार, चैत्य आदि भी प्रसिद्ध है। स्तूप बौद्ध भिक्षुओं के अवशेषों पर बनाये जाते हैं।

यह अर्धगोलाकार आकृति का होता है। हर्मिका इसका सबके पवित्र भाग होता है स्तूपों में सारनाथ का स्तूप,सांची का स्तूप ,भरहुत का स्तूप, तक्षशिला का धर्मराजिका स्तूप प्रसिद्ध है। ये स्तूप अपनी अदभूत कलाकृति के कारण प्रसिद्ध है। विहारों में नालन्दा विहार , विक्रमशीला विहार सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं । महाराष्ट्र का कार्ले का चैत्य पूरे भारत वर्ष में अपनी कलाकृति के कारण प्रसिद्ध है। मन्दिर स्थापत्य कला मे पूरे भारत में तीन शैलियों का भी विकास हुआ है। उत्तरभारत में नागर शैली, मध्यभारत में बैसर शैली व सुदुरदक्षिण भारत में द्रविड शैली का विकास हुआ है। अलग-अलग शासकों ने इन शैलियों को समय-२ पर विकसित किया है।

दक्षिण भारत में द्रविड शैली के बहुत से मंदिर प्रसिद्ध है। जिनमें मिनाक्षी मंदिर, राजराजेश्वर मन्दिर, महाराष्ट्र का कैलासनाथ मंदिर, शोर मंदिर , केरल का सबरी माला मंदिर, पद्मनाभ स्वामी मंदिर अनेक ऐसे मन्दिर है।

जो अपनी अदभुत स्थापत्य शैली के कारण विश्व प्रसिद्ध है। पूरे भारत में दक्षिण भारत ही ऐसा स्थान है जहाँ स्थापत्य कला का विकास हुआ है। इसका एक ही कारण है कि विदेशी आक्रांताओं का दक्षिण तक न पहुंच पाना। जिसके कारण कला का विकास शान्ति में सम्पन्न होता है। दक्षिण भारत के मंदिरों की विशेषता के तौर पर देखा जाये तो उनका विशाल गोपुरम, मण्डप, अर्द्धमण्डप, ज्यामितीय पद्धति का विशाल गुम्बद प्रसिद्ध थे।

इसके साथ ही भारत में मध्यकाल में कई विदेशी अरब आक्रमणकारी आये , जिन्होंने भारत की संस्कृति के साथ आत्मसात कर लिया जिनमें अरबी, ईरानी, ईराकी, अफगान, मंगोल शामिल थे । मध्यकाल में भारत में सल्तनत काल व मुगल काल का युग रहा है। जिनके कारण भारत में अरबी शैली व इस्लामिक शैली का विकास हुआ था। भारत में इस्लामिक शैली की शुरुआत मुहम्मद गौरी के भारत आगमन व सत्ता प्राप्ति के साथ ही माना जाता है। जिसके साथ ही भारत में मिनारें, गुम्बद, शहतीर पद्धति,कमलकली,मस्जिद, मजार,दरगाह आदि का निर्माण होता है। भारत में इल्तुतमिश को मकबरा निर्माण शैली जनक माना जाता है।

सल्तनत काल में बनी इमारतो में साज-सज्जा के स्थान पर मजबूती पर सर्वाधिक ध्यान दिया गया है। मुगल काल में स्थापत्य कला का कुछ अलग तरीके से विकास किया गया है । बाबर को भारत में चारबाग

शैली का जनक मानते हैं , इसके साथ ही हुमायु व अकबर ने भी स्थापत्य कला में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अकबर ने फतेहपुर सीकरी नगर की स्थापना करके उनमें बहुत सी इमारतों को साकार रूप प्रदान किया है। जहाँगीर के काल में स्थापत्य कला के अलावा चित्रकला का सर्वाधिक विकास होता है। शाहजहाँ ने मुगल काल को स्थापत्यकला मे एक अहम् मुकाम प्रदान किया है। शाहजहाँ इमारतों में संगमरमर का प्रयोग करके स्थापत्य कला का एक नया रूप प्रदान किया है और पित्रादूरा नामक एक नई शैली का भी विकास हुआ है। शाहजहाँ की इमारतों में ताजमहल, दिल्ली का लालकिला, मोती मस्जिद आदि इमारते हैं। इसके साथ ही भारत में उपनिवेशकाल के दौरान कंपनी के आगमन पर एक नई शैली की इमारते बनने लगी। जिसमें इमारतों का स्वरूप गिरजाकार होता था और साथ में विशाल इमारतें व मीनारें भी होती थी।

ब्रिटिश काल की भारत में प्रथम इमारत जहृर्ज विलियम फोर्ट को माना जाता है ,जिसका निर्माण ब्रिटिश सरकार ने अपनी सुरक्षा हेतु करवाया था । भारत की स्थापत्य कला के बारे में जितना लिखा जाए उतना ही कम है। भारत की इमारतों पर कई

इतिहासकारों ने विस्तृत अध्ययन किया है जिनमें पर्सी ब्राऊन ,रुडयार्ड किपलिंग, जैम्स प्रिसेंप, कर्नल टहृड, जी.एच. ओझा आदि इतिहासकारों ने विस्तृत रूप से विवेचन किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

१.भारतीय कला का परिचय भाग - प्रथम NCERT BOOKS
२.भारतीय कला का परिचय भाग-२ राज. मा. शिः बोर्ड पुस्तकों का संकलन
३.भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्यकला- राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
४.मंदिर स्थापत्य का इतिहास - बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी-पटना
५.प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति - के.सी. श्रीवास्तव, डहृ हरिश्चंद्र वर्मा